ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218
Vol-5, No.-II,PP-111-115, Issues-VI YEAR-Dec.2016

रामगढ़ क्षेत्रा के लोगों पर औद्योगीकरण का प्रभाव

मधु कमल
शोधर्थिनी, पी–एच.डी. समाजशास्त्रा, टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, (बिहार) भारत

भूमिका : परिवर्तन प्रकृति का नियम है अतः कोई भी समाज स्थिर एवं अपरिवर्तित नहीं रह पाता है। आधुनिक युग में औद्योगीकरण को सामाजिक परिवर्तन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारक माना जाता है क्योंकि यह केवल उद्योग–धन्धें के विकास में ही सहायक नहीं होता बल्कि यह परिवार, समाज, व्यापार, रोजगार, कृषि, यातायात, संचार एवं व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय आय आदि जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

झारखंड प्रदेश के रामगढ़ जिले में तीव्र औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप यहाँ के निवासियों के जीवन के हर क्षेत्रों में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है क्योंकि यहाँ की खनिज सम्पदा औद्योगीकरण को बढ़ावा दे रही है तथा रामगढ़ को औद्योगिक नगर के रूप में विकसित कर रही है। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए जिज्ञासावश रामगढ़ को अध्ययन–क्षेत्रों के रूप में चुना गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि रामगढ़ पर औद्योगीकरण का क्या प्रभाव पड़ रहा है, अर्थात् यहाँ के लोगों के जीवन में किन प्रकार के भौतिक तथा अभौतिक प्रभाव पड़ रहे हैं, समाज के मूल्यों एवं मान्यताओं, स्वीकृत, रीति रिवाजों आदि किस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं तथा लोगों की रूची एवं पसंद आधुनिक मूल्यों, मान्यताओं एवं वस्तुओं की ओर क्यों होती जा रही है।

उद्देश्य : रामगढ़ के निवासियों पर औद्योगीकरण के प्रभावों को जानने के उद्देश्य से की उनके सामाजिक मूल्यों, मानदंडों, परम्पराओं, रूढ़ियों एवं मनोवृत्तियों में क्या परिवर्तन हो रहा है, कृषि ग्रामीण एवं लघु उद्योगों पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है, युवा वर्ग की मनोवृत्ति तथा व्यवहार में परिवर्तन क्यों हो रहे हैं एवं प्राथमिक सम्बन्ध की जगह द्वितियक सम्बन्ध की प्रधनता क्यों होती जा रही है, यातायात एवं संचार के आधुनिक साध्न इनके जीवन को कैसे प्रभावित कर रहे हैं, नवीन शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधाओं को लोग किस प्रकार ग्रहण कर रहे हैं, औद्योगीकरण से उत्पन्न प्रदुषण आवास की समस्या तथा गन्दी वस्तुओं के विकास, पेयजल की समस्या, अपराध, बाल अपराध, हिंसा, नशाखोरी आदि समस्याओं का रामगढ़ ग्रामीण क्षेत्रों के जनजाति एवं कमजोर वर्ग के लोगों के परिपेक्ष में अध्ययन इस शोध का उद्देश्य है। **उपकल्पनाएँ** : शोधर्थी ने अपने इस अध्ययन में कुछ उपकल्पनाओं की भी जाँच की है ताँकि इस क्षेत्रों के लोगों से सम्बन्धित वास्तविक तथ्यों को प्रकाश में लाया जा सके और इस प्रारम्भिक ज्ञान के आधर पर शोध कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जा सके। स्पष्ट है कि उपकल्पना मानव ज्ञान के पूर्व ज्ञानों पर आधारित सत्य की खोज करना है। लुण्डबर्ग ने उपकल्पना को एक कामचलाउ सामान्यीकरण जुडे एवं हाट ने इसे मान्यता तथा पी.व्हीं. यंग ने कार्यवाहक विचार बताया है जो अध्ययन कार्य में मार्ग निर्देशन करती है, अध्ययनकर्ता को इधर–उधर भटकने से रोकती है तथा उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करने तथा पूर्व निष्कर्षों का सत्यापन करने में सहायक होती है।

अनुरूपी लेखक

ISSN No. 2347-2944 ASVP Society Reg. No. 581/2013-14

ISSN No. 2347-2944 ASVP Society Reg. No. 561/2013-14

इस अनुसंधान के लिए निम्नलिखित उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया :

1. विज्ञान तथा औद्योगीकरण में सकारात्मक सम्बन्ध पाये जाते हैं।
2. औद्योगीकरण के कारण संस्थागत मूल्यों में विस्तार होता है।
3. औद्योगीकरण के कारण समाज में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का परिवर्तन होते हैं।

अध्ययन पद्धति : रामगढ़ क्षेत्रा से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के 100 परिवारों को दैव निदर्शन पद्धति द्वारा चुना गया। एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा हर परिवार के एक वयस्क सदस्य से समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया गया।

पहले रामगढ़ बहुत ही अविकसित था, इसके अधिकतर भाग जंगलों से घिरे थे और मुख्य व्यवसाय कृषि था। उद्योग–धन्धें, पिछड़ी अवस्था में थे,मगर अब उद्योगों तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों में बहुत वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप नगरीकरण तथा आधुनिकीकरण का प्रसार हो रहा है। औद्योगीकरण के कारण आर्थिक क्षेत्रों में तेजी से परिवर्तन होने के साथ ही साथ श्रम–विभाजन एवं विशेषीकरण की प्रक्रिया में भी तीव्रता पायी जा रही है।

औद्योगीकरण एवं नगरीकरण आदि के परिणामस्वरूप इस क्षेत्रा की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। जनसंख्या में वृद्धि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक संस्थाओं का विकास हुआ जैसे पुलिस, जेल, न्यायालय, बड़े डाकखानों, बैंक, श्रम तथा आमोद प्रमोद के अनेक साधन, मार्केट, आवागमन तथा संचार के नवीन साधन, छोटे–बड़े हर स्तर के होटल तथा ठहरने के स्थान की व्यवस्था की है।

अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि लोगों का अपने समूह से तादाम्य की भावना कम होती, औपचारिक सम्बन्ध अधिक होते तथा संतोष की भावना समाप्त होती जा रही है। साक्षात्कार अनुसूची द्वारा चयनित उत्तरदात्ताओं से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से रामगढ़ के लोगों पर औद्योगीकरण के प्रभाव का अनुमान निम्नलिखित रूप में लगाया जा सकता है।

औद्योगीकरण के पहले रामगढ़ में लोगों का जीवन सरल, जीवन स्तर निम्न, परम्परागत तथा अनौपचारिकता। लोग मुख्यतः कृषि तथा मजदूरी पर निर्भर करते थे। जबकि अब लोग कृषि के साथ ही साथ औद्योगिक व्यवसाय को अपनाने लगे, नौकरी करने लगे तथा व्यापार में संलग्न होने लगे हैं। इन तथ्यों को निम्न सारणी द्वारा समझा जा सकता है:

सारणी नं0 – 1

उत्तरदात्ताओं का व्यवसाय

क्र.सं.	व्यवसाय	उत्तरदाता	प्रतिशत
1.	व्यापार	16	16
2.	नौकरी	32	32
3.	स्वतंत्रा पेशा	32	32
4.	जातिगत पेशा	6	6
5	मजदूरी	14	14
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि व्यापार में 16% व्यक्ति व्यापार में संलग्न है। नौकरी, सरकारी तथा प्राइवेट में 32% लोग कार्यरत हैं। इसी प्रकार 32% लोग नवीन पेशों जैसे– होटल, शीशा, सिमेन्ट, एल्युमीनियम तथा अन्य प्रकार के उद्योगों से सम्बन्धित कार्यों में संलग्न है। अब जातिगत पेशे मात्रा 6% लोगों को आकर्षित कर पा रहे हैं। मजदूरों की संख्या 14% है जिसमें सामान्यतः अशिक्षित, निर्धन एवं भूमिहीन लोग है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि अब इस क्षेत्र के लोग अपने गांव से शहर की ओर भी प्रवास करने लगे हैं। इस प्रकार ग्राम का नगर से सम्बन्ध स्थापित होने लगा है। कुछ लोग ऐसे भी मिले, जिन्हें समय तथा स्थिति के अनुसार गांव तथा नगर दोनों स्थानों पर रहना पड़ता है और कुछ लोग तो गांव की जमीन बेचकर शहर में ही स्थायी रूप में निवास करने लगे हैं। शहर में नौकरी, वहाँ की सुविधायें तथा बच्चों की पढ़ाई एवं चिकित्सा सुविधा आदि उन्हें नगर की ओर खींचती जा रही हैं। कुछ लोग

ऐसे भी हैं जो प्रतिदिन व्यापार अथवा मजदूरी करके अपने गांव लौट आते हैं। निम्न तालिका से इस स्थिति का पता चलता है :

सारणी नं0 – 2

उत्तरदाताओं का निवास स्थान

क्र	निवास स्थान	संख्या	प्रतिशत
1	नगर	48	48
2	गाँव	36	36
3	दोनों स्थान पर	16	16
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि नगरों में अधिकांश उत्तरदाताओं (48%) का निवास स्थान है। नगरों की सुविधाओं को देखते हुए इस क्षेत्रा के लोग धीरे–धीरे शहरों में बस जाना बेहतर समझने लगे हैं, जबकि अभी भी 36% लोग गाँव में ही रह रहे हैं। इसके विपरित 16% लोग ऐसे हैं,जो गाँव तथा शहर दोनों स्थानों पर आवश्यकतानुसार रहते हैं। व्यापार अथवा नौकरी करते–करते लोग नगरीय क्षेत्रा में ही जमीन खरीदते और मकान बनाकर रहने लगे हैं। प्राप्त तथ्यों से यह भी ज्ञात होता है कि इस क्षेत्रा के लोगों की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी है, प्रति व्यक्ति आय बढ़ने लगी है और लगे खुशहाल होने लगे हैं। शैक्षणिक स्तर के ऊँचे होने, अच्छी नौकरी प्राप्त होने अथवा व्यापार में वृद्धि होने के कारण लोग सुखी सम्पन्न होने लगे हैं, रहन–सहन का स्तर ऊँचा होने लगा है और जीवनशैली बदलने लगी है।

सारणी नं0 : 3

उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति

क्र. सं.	आय समूह	संख्या	प्रतिशत
1.	5000–10,000	14	14
2.	10001–15,000	38	38
3.	15001–20,000	20	20
4.	20001–25,000	24	24
5	25001 के ऊँपर	4	4
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि 5000 से 10,000 रू. के बीच प्रतिमाह कमाने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 14 प्रतिशत है, जबकि 5000 रू. (38 प्रतिशत) उन उत्तरदाताओं की है जो 10 से 15 हजार रू. प्रतिमाह के बीच अपनी नौकरी अथवा व्यवसाय से प्राप्त करते हैं। 15 से 20 हजार प्रतिमाह कमाने वालों की संख्या 20 प्रतिशत है, तथा 24 प्रतिशत उत्तरदाता 20 से 25 हजार प्रति माह अर्जित करते हैं, इसके विपरित मात्रा 4 प्रतिशत लोग 25 हजार प्रतिमाह से अधिक कमाने वाले हैं। स्पष्ट है मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या अधिक हो रही है। उत्तरदाताओं से यह जानने का भी प्रयास किया गया कि किन कारणों से वे उद्योगों में काम करते हैं। प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांशतः लोग नौकरी प्राप्त करने के लिए औद्योगिक संस्थानों में जाते हैं,क्योंकि परम्परागत पेशों से उनके परिवार का पालन पोषण नहीं हो पाता अथवा वे संतुष्ट नहीं रह पाते, अथवा नगरों का जीवन उन्हें आकर्षित करता है, अथवा अनेक नगरीय सुविधएं उन्हें अपनी ओर खींचती हैं। इसी प्रकार किसी और दूसरी मजबूरी के कारण भी वे नगरों की ओर आते हैं। इन तथ्यों का पता निम्न तालिका में भी होता है।

सारणी नं0 : 4

औद्योगिक क्षेत्रों में जाने का कारण

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने के कारण	उत्तरदाता	प्रतिशत
1	आर्थिक कारण	76	76
2	आत्म संतुष्टि के लिए	10	10
3	अन्य कारण	14	14
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोग (76 प्रतिशत) औद्योगिक क्षेत्र में आर्थिक कारणों से अथवा आर्थिक लाभ के लिए जाते हैं, 14 प्रतिशत शैक्षणिक, चिकित्सा, आवागमन तथा संचार आदि सुविधाओं आदि के

ISSN No. 2347-2944 ASVP Society Reg. No. 581/2013-14

ISSN No. 2347-2944 ASVP Society Reg. No. 561/2013-14

कारण निवास करते तथा 10 प्रतिशत आत्म–संतुष्टि के लिए वहाँ बसते हैं।

साक्षात्कार द्वारा यह जानने की भी चेष्टा की गयी कि परिवार के कितने सदस्य आर्थिक लाभ के लिए कार्य करते हैं। सामान्यतः पाया गया कि परिवार का हर सदस्य, छोटे बच्चों को छोड़कर, किसी न किसी प्रकार के आर्थिक गतिविधि में लगा रहता है। औद्योगीकरण के इस वातावरण में हर व्यक्ति की मानसिकता बदल गयी है। व्यक्तिवादिता तथा भौतिकवादिता ने हर मस्तिष्क में घर कर लिया है। हर व्यक्ति अधिकाधिक धन कमाना तथा अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति करना चाहता है। प्रतिस्पर्द्धा की भावना से भरा आज का मनुष्य मशीनी जीवन व्यतीत करने पर मजबूर है। यही कारण है कि कुछ परिवारों में माता तथा पिता के अतिरिक्त बेटा, बेटी भी कार्यरत पाये जाते हैं, अर्थात् पुरा परिवार धनार्जन में लगा रहता है। जिसको जहाँ अवसर मिलता आर्थिक लाभ प्राप्त करने की चेष्टा करता है। निम्न तालिका में इसका वर्णन है :

सारणी नं0 – 5

परिवार के सदस्यों का काम करना

क्र. सं.	काम करने वाले	संख्या	प्रतिशत
1.	पिता	72	72
2.	माता	12	12
3.	पुत्र	9	9
4.	पुत्री	4	4
5	अन्य	3	3
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 72 प्रतिशत परिवार के योग्य एवं वयस्क पुरुष आर्थिक लाभ का कार्य करते हैं, जबकि इनमें से 12 प्रतिशत महिलाओं अथवा पत्नीयों को भी आर्थिक व्यवहार में संलग्न पाया गया। इसी प्रकार 9 प्रतिशत पुत्र, 4 प्रतिशत पुत्री तथा परिवार के 3 प्रतिशत अन्य सदस्य किसी–न–किसी प्रकार के कार्य में संलग्न रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिवार के अधिकतर सदस्य आर्थिक गतिविधियों में लगे रहते हैं तथा जो काम कर सकते हैं वे करते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आज का मनुष्य समय का महत्व समझने लगा है तथा उपलब्ध अवसर का सद्उपयोग करना चाहता है। अपने घरेलू कार्यकलाप के साथ ही साथ स्त्रियाँ एवं बच्चे भी अपनी सुविधा के अनुसार काम करना चाहते हैं और अपनी कमाई से अपने तथा परिवार के आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते हैं। औद्योगीकरण ने किसी–न–किसी रूप में हर व्यक्ति के लिए कार्य करने तथा आर्थिक लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर दिया है, चाहे रिक्शा चालक, बस, ट्रेक्टर या ट्रक चालक के रूप में, सपफाई या ईंट, बालू, पत्थर आदि ढोने वाले मजदूर के रूप में अथवा मशीन पर काम करने वाले अथवा ऑफिस में निम्न अथवा उच्च स्थान का कार्य करने वाले के रूप में। कहने का अर्थ यह है कि आज योग्यता एवं कुशलता के आधार पर हर व्यक्ति अपनी जीविकोपार्जन में लगा हुआ है, यहाँ तक की छोटे–छोटे बच्चे भी अपनी आयु के अनुसार हल्के–फुल्के कार्य करते नजर आते हैं।अध्ययन में पाया गया कि वर्तमान नियोजन से अधिकांश लोग असंतुष्ट हैं। जातिवाद, क्षेत्रावाद, धर्मिक भेद–भाव आदि का प्रभाव औद्योगिक क्षेत्रों एवं नगरों में भी पाया जाने लगा है। अपनों से सहयोग तथा सहायता की प्रवृति तानाशाही नीति तथा दूसरों से दूरी बरतने की भावना यहाँ के लोगों के जीवन को प्रभावित करने लगी है। इन तत्वों के कारण लोगों में असंतुष्टी पायी जाती है। इसी प्रकार प्रबन्धक केवल काम खोजते हैं सुविधा प्रदान करने में आनाकानी करते हैं जिससे असंतोष होता है तथा सौहार्दपूर्ण वातावरण नहीं पायी जाती है। सहयोग, सहायता, प्रेम तथा अच्छे व्यवहार से कर्मचारी में काम के प्रति अपनापन की भावना उत्पन्न होती है जो अच्छे तथा अधिक

उत्पादन के लिए आवश्यक होती है।

उत्तरदाताओं से छुट्टी का समय बिताने सम्बन्धी भी कुछ प्रश्न किए गये। सूचना के अनुसार साप्ताहिक छुट्टी की मजदूर, कारीगर अथवा अन्य कार्यकर्ता बड़ी बेशबरी से इन्तेजार करते हैं। सप्ताह में एक दिन की छुट्टी उनके शारीरिक एवं मानसिक आराम के लिए, घरेलू कामकाज के लिए दूसरों से मिलने–जुलने अथवा अन्य कार्यों के निष्पादन के लिए इसकी बड़ी सख्त आवश्यकता होती है। खेल–कूद तथा आमोद–प्रमोद का यह एक अच्छा अवसर होता है। छुट्टी के अवसर पर उत्तरदाता अपना समय कैसे व्यतीत करते हैं, इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार के उत्तर पाये गये हैं :**सारणी नं0 – 6**

छुट्टी का समय बिताने सम्बन्धी उत्तरदाताओं के विचार

क्र. सं.	छुट्टी बिताने के तरीके	संख्या	प्रतिशत
1.	परिवार में बच्चों के साथ	38	38
2.	शहर में घुम–फिर कर	21	21
3.	सिनेमा आदि देखकर	15	15
4.	मित्रों के साथ	12	12
5	गाँव जाकर	14	14
	कुल योग	**100**	**100**

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश (38%) उत्तरदाता अपनी छुट्टियों को परिवार में बच्चों के साथ मिल–बैठकर गुजारते हैं, जबकि 21 प्रतिशत परिवार के अन्य सदस्यों के साथ शहर में कहीं घूम फिरकर छुट्टियाँ मनाते हैं, 15 प्रतिशत सिनेमा, खेलकूद आदि में समय बिताते हैं और इनमें से 14 प्रतिशत अपने गांव जाते और लोगों से मिल–जुल कर अथवा वहाँ के किसी आवश्यकता की पूर्ति करके आते हैं, जबकि 12 प्रतिशत अपने मित्रा मंडली में समय व्यतीत करते हैं। इस प्रकार हर व्यक्ति की अपनी अलग रूचि तथा आवश्यकता होती है जिसके अनुरूप वे व्यवहार करते हैं।

अध्ययन के क्रम में अवलोकन से यह भी पता चला कि अध्किांशतः मजदूर, कामगार तथा छोटे व्यापारीगण ग्रस्त हैं जो वे अधिकतर सुविध की दृष्टि से महाजन द्वारा ही अधिक ब्याज दर पर ऋण लेते जो लम्बी अवधि तक उनका पीछा नहीं छोड़ती है। इसी प्रकार अधिकतर लोग नशाखोरी करते भी पाये जाते हैं। ऐसा देखा जा रहा है कि औद्योगीकरण शहर और गांव के बीच की दूरी को तेजी से कम करता जा रहा है। यातायात तथा संचार के साधनों की इसमें अहम् भूमिका है। शहरी विकृतियाँ और आधुनिकता का दानव गाँव से उसकी सभ्यता, नैतिकता, भाईचारगी, सहयोग, अपनापन की भावना छीनती जा रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Borland, Marie (ed.),Violence in the Family, Manchester University of Press, Manchester, 1976.
2. Curtis, Lynn A., Criminal Violence, Luxington Books, Kentucky, 1974.
3. Leonard, E.B., Women, Crime and Society, Longman, New York, 1982.
4. Wolfgang, M.E., "Violence in the Family" in Kutash et al.,Persectives in Murder and Aggession, John Wiley, New York, 1978.
5. डॉ0 आहूजा, राम : भारतीय सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 2000।
6. डॉ0 महाजन, धर्मवीर : अपराधशास्त्र, विवके प्रकाशन दिल्ली 2006।
7. श्रीवास्तव, डॉ0 राजीव कुमार : वैश्वीकरण एवं समाज, वैभव प्रकाशन वाराणसी, 2012–13, पृ0 46–56।

ISSN No. 2347-2944 ASVP Society Reg. No. 581/2013-14